संक्षिप्त परिचय

डॉ. कृष्ण कुमार

जन्म: 14 फरवरी 1941, बहराइच, उत्तर प्रदेश।

शिक्षा:

- बहराइच, लखनऊ विश्वविद्यालय –प्राथमिक एवं माध्यमिक
- **आई.आई.टी. मद्रास** : बी. टेक., 1964
- **ब्रैडफोर्ड टेक्निकल कालेज (यू.के.):** टेलीविज़न सर्टिफ़िकेट, 1972
- **पोर्ट्समथ विश्वविद्यालय (यू.के.):** एम. एस. सी., 1977
- **सर्रे विश्वविद्यालय (यू.के.):** पी.एच.डी., 1980

कार्यक्षेत्र:

- पेशे से इंजिनियर का कार्यकाल आई.आई.टी. देहली से 1965 में प्रारम्भ हुआ तथा 1971 भारत में कार्य किया।
- 1971 से 1977 तक यू.के. की विभिन्न इलेक्ट्रानिक्स की कम्पनियों में कार्य।
- 1981 से 1983 तक बर्मिघम विश्वविद्यालय में शोध एवं अध्यापन।
- 1983 से 1996 तक भारत एवं यू.के. की विभिन्न संस्थाओं एवं कम्पनियों में विज़िटिंग प्राध्यापक।
- 1983 से 1989 तक नॉनयाँग तकनीकी विश्वविद्यालय, सिंगापुर, में वरिष्ठ प्राध्यापक।
- 1989 से अगस्त 2004 तक यूनीवर्सिटी आफ़ सेन्ट्रल इंग्लैंड बर्मिघम्, यू.के. में वरिष्ठ प्राध्यापक।

साहित्यिक गतिविधियाँ :

- 1954 से निरंतर हिन्दी एवं अन्य भाषाओं की सेवा में संलग्न।
- 1956 में हिन्दी का विरोध करने वालों के विरुद्ध एक आन्दोलन, (बहराइच)।
- 1975 में हिंदी भाषा एवं भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिये तुलसी कृत रामचरित मानस का, अन्य सहयोगियों के साथ प्रचार-प्रसार (लंदन)।
- 1995 में "गीतांजलि बहुभाषीय साहित्यिक समुदाय" का बर्मिघम् (यू.के.) में गठन एवं संस्थापन। गीतांजलि के माध्यम से भारत की विभिन्न भाषाओं में कविता लिखने वालों को एक साथ मंच देते हुए उन्हें रचनात्मक कार्य के लिए प्रोत्साहित करना।
- छठे विश्व हिन्दी सम्मेलन (1999) की कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष।
- प्रतिवर्ष, 1995 से, अन्तर्राष्ट्रीय बहुभाषीय कवि सम्मेलन का, बर्मिघम् में, आयोजन।
- गीतांजलि समुदाय के सदस्यों की रचनाओं का भारत की विभिन्न भाषाओं में प्रकाशन एवं सम्पादन।
- यू.के. से प्रकाशित एकमात्र बहुभाषी त्रैमासिक पत्रिका "पुरवाई" के भूतपूर्व सम्पादन सलाहकार।
- भारतीय संस्कृति एवं भाषाओं के प्रचार-प्रसार में संलग्न होते हुए कई महत्वपूर्ण योजनाओं का सूत्रपात, स्थानीय बी.बी. सी.रेडियो एवं अन्य संस्थाओं के साथ।
- भारत एवं यू.के. के समाचार पत्रों में साक्षात्कार एवं भागीदारी।
- भारत के दूरदर्शन एवं रेडियो में कई साक्षात्कार एवं भागीदारी।
- जुबली 2000 में ''विश्व कर्ज'' परियोजना में भागीदारी।
- साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित अंतराष्ट्रीय संगोष्ठी में आलेख प्रस्तुति के लिए आममंत्रण।
- दिसम्बर 2003 में नाटिंघम में एक शाखा प्रारम्भ।
- मई 2005 में ''मल्टीलिंग्वल फोरम फॉर इन्टीग्रेशन ऐंड पीस'' की स्थापना (बर्मिघम्)।
- 2005 में अन्तर्राष्ट्रीय बहुभाषीय संगोष्ठी का आयोजन। जिसमें भारत एवं अन्य देशों से विद्वानों ने आ कर "भारत की सार्वभौमिक अखंडता" जैसे विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। इस संगोष्ठी में यू.पी. हिन्दी संस्थान का एक विशेष ऐतिहासिक योगदान रहा था।

- सितम्बर 2006 में 22वें अन्तर्राष्ट्रीय रामायण सम्मेलन का बर्मिघम, यू.के., में आयोजन।
- नवम्बर 2006 में 29वें 'अन्तर्राष्ट्रीय समकालीन साहित्य सम्मेलन', यू.के., के आयोजन में योगदान।
- जून 2007 में बहुभाषीय कहानी कार्यशाला का आयोजन, श्री रवीन्द्र एवं श्रीमती ममता कालिया जी के निर्देशन में।
- अगस्त 2007 में यू.के. में "रामायण ज्ञानकेन्द्र की स्थापना"।
- 2009 में गीतांजलि समुदाय के भारत मुख्यालय का शुभारम्भ अयोध्या में तथा दिल्ली शाखा का सूत्रपात।
- 2009 में अयोध्या शोध संस्थान की शोध समिति के नामित सदस्य।
- 2012 में युवापीढ़ी को प्रोत्साहन देने के लिए 8 अप्रैल को ''गीतांजलि सर्कल फॉर यंग क्रिएटिव राइटर्स'' की स्थापना एवं उद्घाटन बर्मिघम के कौसलावास में।

बचपन से ही पवन पुत्र हनुमान भक्त, रामचरित मानस के उपासक एवं साधक।

विशिष्ट साहित्यिक योगदान :

2005 से मध्य प्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के सहयोग से **"शैलेश मटियानी कथा सम्मान"** की शुरुआत। 31 दिसम्बर 2005 को पहला सम्मान श्री हीरा लाल नागर जी को रमेश शाह द्वारा भोपाल में दिया गया।

बहराइच शहर के उन्नयन के लिए साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्था *''पहचान बहराइच"* की स्थापना, 2 फरवरी 2006।

क्रिसचियन एड की मानवतावादी विश्वव्यापी अपील जुबली 2000 में सहभागिता

नई सहस्राब्दि का स्वागत करने के लिए क्रिसचियन एड ने जुबली 2000 अपील की घोषणा 1990 दशक के उत्तरार्ध में ही कर दी थी। इस विश्वव्यापी अभियान में यह अपील की गई थी कि 1970 से कर्ज के बोझ से दबे गरीब देशों के साथ न्याय होना चाहिए तथा इससे उन देश वासियों को मुक्ति मिलनी चाहिए। इसके मुख्य मुद्दों पर विचार करने के बाद "गीतांजलि बहुभाषीय साहित्यिक समुदाय" ने भी इसमें अपनी सहभागिता दर्ज कराने का निर्णय ले लिया। समुदाय के, तत्कालीन, 6 सदस्यों ने 'विश्व कर्ज माफी' विषय पर तीन भाषाओं में (अंग्रेजी में उनके अनुवाद के साथ) हस्तलिखित अपनी-अपनी रचनाएं भेज दीं। इन कविताओं को संकलित कर एक छोटी सी पुस्तक का आकार दिया गया। कवियों ने अपनी इन रचनाओं को जॉर्ज कैडबरी हाल, सेली ओक, बर्मिघम्, में क्रिसचियन एड द्वारा आयोजित एक सांस्कृतिक कार्यक्रम में 16 मई 1198 को प्रस्तुत कर लगभग 200 लोगों को वितरित भी किया था, ताकि ये लोग इसके बारे में बातें कर समाज के अन्य व्यक्तियों तक भी पहुंचाएं। इन कवियों ने बाद में, एक विशिष्ट रेडियो प्रसारण के माध्यम से जिसके लिए क्रिसचियन एड को एक खास फ्रीक्वेंसी भी दी गई थी, कार रोड स्थित संस्स्थान से एक ही समय पर विश्व के कोने-कोने में पहुंचाया था। विश्व मानव समाज को अपनी इस सेवा अर्पण से "गीतांजलि बहुभाषीय साहित्यिक समुदाय" को गर्व है। अधिक विवरण के लिए समुदाय के मकड़जाल www.GMLCUK.com को देखा जा सकता है।

अंतरराष्ट्रीय साहित्यिक एवं सांस्कृतिक आदान-प्रदान

संस्थापित तीनों संस्थाओं, "गीतांजलि बहुभाषीय साहित्यिक समुदाय", ''मल्टीलिंग्वल फोरम फॉर इन्टीग्रेशन ऐंड पीस'' एवं ''गीतांजलि सर्कल फॉर यंग क्रिएटिव राइटर्स'', के माध्यम से भाषायी समन्वय एवं सामाजिक समरसता-एकता को बढ़ाने का कार्य निम्न दो स्तरों पर किया जाता है:

1. मुख्य संस्था "गीतांजलि बहुभाषीय साहित्यिक समुदाय" के 1995 से अब तक वार्षिक बहुभाषीय कवि सम्मेलन में भारत सरकार द्वारा प्रवर्तित कवियों एवं अन्य देशों से आमंत्रित कवियों के साथ स्थानीय साहित्यकारों तथा प्रतिभागियों के विचारों के विनिमय के माध्यम से।
2. समय-समय पर भारत से कलमकारों एवं सांस्कृतिक कलाकारों के दल को यू.के. में आमंत्रित कर स्थानीय कलमकारों एवं प्रतिभागियों के साथ 2-3 दिवसीय गोष्ठियों में विचारों का आदान-प्रदान एवं इसी प्रकार यू.के. से दल को भारत एवं अन्य देशों में ले जा कर स्थानीय लोगों के साथ विचार-विनिमय। इसके अंतर्गत अब तक निम्न कार्यक्रम आयोजित किए जा चुके हैं:

2.1 जून 2008 में प्रो.लारी आज़ाद के नेतृत्व में ''अखिल भारतीय कवयित्री सम्मेलन'' संस्था की 26 कवयित्रियों के लिए एक त्रिदिवसीय सम्मेलन आयोजित किया गया। इन अतिथियों के आतिथ्य, खाने एवं आवास, का प्रबंध गीतांजलि के सदस्यों ने किया था। इन अतिथियों के साथ आज भी आदान-प्रदान चल रहा है।

2.2 मई 2009 में गीतांजलि समुदाय के 9 सदस्य एक सप्ताह के लिए विचारों के आपसी आदान-प्रदान के लिए अमेरिका एवं कनाडा गए थे जहाँ इसके सूत्रधार अमेरिका के श्री अनूप भार्गव थे। सब लोग अनूप जी के घर पर ही

ठहरे थे तथा प्रतिदिन कम से कम साहित्यिक कार्यक्रम आयेाजित हुआ था। यही रूपरेखा कनाडा में भी रही जहाँ सारे लोग विभिन्न घरों में ठहरे थे। कई टी.वी. एवं रेडियो प्रसारण भी हुए थे।

2.3 अक्टूबर 2009 में गीतांजलि समुदाय के 6 सदस्य भारत गए थे जहाँ अयोध्या सहित कई स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित हुए तथा अनेक समाचार पत्रों के साथ लोगों के साक्षात्कार प्रकाशित हुए। यहाँ पर सबको होटलों में ठहराया गया था।

2.4 जून-जूलाई 2015 में आधारशिला फाउंडेशन के 30 सदस्यों का एक दल, एक सप्ताह के लिए, डॉ. दिवाकर भट्ट के नेतृत्व में यू.के. आया। साहित्यिक-सांस्कृतिक कार्यक्रम लंदन-बर्मिघम् सहित कई अन्य स्थानों पर आयेाजित किए गए थे। इनके आवास के प्रबंध को छोड़ कर सारी व्यवस्था गीतांजलि समुदाय के सदस्यों ने की थी। इस संस्था ने यू.के. के कुछ चुनिंदा साहित्यकारों को, बर्मिघम् काउंसलेट के परिसर में, सम्मानित भी किया था। गीतांजलि समुदाय ने भी भारत के स्थापित साहित्यकार एवं राजनेता श्री भगत सिंह कोश्यारी जी को ''भारत हिंदी गौरव'' सम्मान से अलंकृत किया था।

2.5 जूलाई 2016 में डॉ. आशीष कंधवे, सम्पादक त्रैमासिक पत्रिका आधुनिक साहित्य, के नेतृत्व में 5 सदस्यों का एक दल आया। आधे दिन के साहित्य सम्मेलन के साथ एक कवि सम्मेलन का आयोजन दुर्गा भवन में किया गय था। सारी मेज़बानी गीतांजलि की ओर से थी। विश्व हिंदी साहित्य परिषद के अध्यक्ष डॉ. आशीष कंधवे ने यू.के. के कई साहित्यकारों को इस अवसर पर सम्मानित भी किया था।

प्रकाशनः कुल मिला कर 26 पुस्तकें प्रकाशित

काव्य संग्रह (8)

- ***"मैं अभी मरा नहीं"*** (ज्ञान भारती, दिल्ली, 1999),
- ***'चिंतन बना लेखनी मेरी'*** (ज्ञान गंगा, दिल्ली, 2003),
- ***'लेकिन पहले इंसान बनो'*** (विचार कविता प्रकाशन, दिल्ली, 2005)।
- ***''अक्षर-अक्षर गीत बने'' (गीत संग्रह, शांति प्रकाशन, इलाहाबाद, 2009),***
- *''एक त्रिवेणी ऐसी भी'' ''(ग्रंथ अकादमी, नई दिल्ली 2009,),*
- *''नर्तन करते शब्द'' (प्रतिभा प्रतिष्ठान, दिल्ली, 2012)*
- *''कैसर कविताएं'' (अनामिका प्रकाशन, इलाहाबाद, 2016)*
- ***''गुनगुनाते शब्द'' (गीत संग्रह, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2017)***

कहानी संग्रह (3)

- **''क्यों, क्यों और आखिर क्यों'',** *(ग्रंथ अकादमी, नई दिल्ली 2012)*
- **''और कथाएं ऐसी भी'',***(नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, 2014)*
- **''जो हम अब तक भूल न पाए'' (आधारशिला प्रकाशन, 2016)**

निबंध संग्रह (2)

''भाषा साहित्य और राष्ट्रीयता *(सस्ता साहित्य मंडल,दिल्ली, 2011)*

''आज का विचार'', छोटे-छोटे समकालीन उपाख्याानों का संग्रह *(वाणी प्रकाशन,सस्ता,दिल्ली, 2014)*

Book in English (2)

- "Poetry between Shores" (A collection of poems in English, Adharshila Publication, 2016)
- ''Theme For Today", from Hindu Perspective thoughts published over three-four years in a Birmingham daily News Paper (Vani Prakashan, Delhi, 2014).

सम्पादनः (11)

- इलेक्ट्रोस्टैटिक डिस्चार्ज (इलेक्ट्रानिक्स कम्पनियों के उपयोग की पुस्तक, 1985)।
- "धनक" - आठ भारतीय भाषाओं का काव्य संकलन, अंग्रेजी अनुवाद के साथ(स्टार पब्लिकेशन, दिल्ली, 1999)।
- "Oasis Poems" – An anthology of Multilingual Poetry with their translation in English (Gitanjali Publication, Birmingham UK, June 2003).
- "Gitanjali Poems from East and West" – 'ओएसिस पोएम्स की भांति अंग्रेजी अनुवाद के साथ भारतीय भाषाओं का एक अन्य काव्य संकलन (Gitanjali Publication, Birmingham UK, October 2003).
- काव्य तरंग' (कविता संग्रह, सात भारतीय भाषाओं में अंग्रेजी अनुवाद के साथ) जनवरी 2006।
- मल्टीफ़ेथ मल्टीलिंग्वल पोएम्स फ़ॉर पीस ऐंड टुगेदरनेस, मार्च 2008।

- सूरज की सोलह किरणें, गीतांजलि समुदाय के 16 सदस्यों का हिंदी काव्य संकलन, प्रथम संस्करण 2008 एवं द्वितीय 2009 में।
- ''अपनी उम्मीदों के साथ'' गीतांजलि समुदाय के 9 सदस्यों का कहानी संग्रह, शिल्पायन प्रकाशन, 2012।
- हिंदी शिक्षण के अंरराष्ट्रीय आयाम, यू.पी. हिंदी संस्थान, 2015।
- ''पोएम्स ऑफ होप'' गीतांजलि सर्किल फॉर यंग क्रिएटिव राइटर्स के 19 बच्चों की अंग्रेजी-हिंदी कविताओं का संकलन, दिसम्बर 2013।
- ''पोएम्स ऑफ प्राइड'' गीतांजलि सर्किल फॉर यंग क्रिएटिव राइटर्स के 27 बच्चों की अंग्रेजी-हिंदी कविताओं का संकलन, दिसम्बर 2016।

शोध समापन्नः

शोधार्थी सुश्री रीना शर्मा ने वर्ष 2016 में ''ब्रिटेन निवासी साहित्यकार डॉ.कृष्ण कुमार के समग्र साहित्य का अनुशीलन'' विषय पर प्रो.हरिमोहन बुधौलिया के निर्देशन में विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (मध्य प्रदेश) के हिंदी अध्ययनशाला से अपना शोध पूरा कर पी. एच.डी. की उपाधि प्राप्त की ।

प्रकाशनाधीनः 3 पुस्तकें

''प्रवासी साहित्य कितना प्रवासी'', फ्रेडरिक पिंकाट का व्यक्तित्व एवं कृतित्व तथा डॉ. धनीराम 'प्रेम' का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

अन्य

- पुरवाई एवं भारत की अन्य पत्रिकाओं में समसामयिक चिन्तन से युक्त लेख एवं कविताओं का प्रकाशन । अनेक कविताएं विभिन्न काव्य संकलनों में संग्रहीत।
- बर्मिघम से प्रकाशित दैनिक समाचार पत्र 'द बर्मिघम पोस्ट' के लिये 'थीम फ़ॉर टुडे' के अन्तर्गत हिंदू समुदाय का प्रतिनिधित्व करते हुए स्वतंत्र लेखन (मई 2003 से)।
- विभिन्न वैज्ञानिक विषयों पर लगभग 50 शोधपत्रों का प्रकाशन।

रेडियो प्रसारणः

- 1995 से निरंतर बी.बी.सी. एशियन नेटवर्क (बर्मिघम) पर विभिन्न साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक विषयों पर अनेक साक्षात्कार एवं कविता पाठ।
- स्थानीय एक्स एल रेडियो पर साक्षात्कार एवं काव्य पाठ।
- बी.बी.सी. एक्सटर्नल सर्विसेज़ पर साक्षात्कार।

सम्मानः

- महत्वपूर्ण समाज सेवा सम्मान बर्मिघम् (1997)।
- चेतना साहित्य परिषद (लखनऊ) सम्मान (1999)।
- नेत्रहीनों की संस्था इमर्ज यू.के. द्वारा सम्मान (2000)।
- भारतीय साहित्य सेवा संस्थान (लखनऊ) सम्मान (2001)।
- लंदन की एशियन हू इज़ हू इंटरनेशनल के अट्ठारहवें संस्करण में परिचय (2005)।
- 'हम एक हैं' संस्था (भोपाल) द्वारा हिन्दी भाषा के लिए राष्ट्रीय एकता सम्मान (2004)।
- मध्य प्रदेश के मुख्य मंत्री बाबू लाल गौड़ द्वारा 11,000 रुपये का तत्काल सम्मान (2004)।
- मध्य प्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति द्वारा विशिष्ट साहित्य सम्मान (2004)।
- बिलासा कला मंच बिलासपुर द्वारा मीराँ पंचशती सम्मान (2005)।
- बरेली लेखिका संघ, मंदाकिनी एवं शब्दांगन द्वारा विशिष्ट साहित्य सम्मान (2005)।
- आग्रा की महानगर लेखिका मंच द्वारा हिन्दी सेवा सम्मान (2005)।
- सत्यशीलता ज्ञानालय, चेन्नई का साहित्य सेवा सम्मान, 27 दिसम्बर 2005।
- चतुर्थ प्रवासी हिन्दी उत्सव-2006 के अन्तर्गत अक्षरम् हिन्दी सेवा सम्मान, 22 जनवरी 2006
- जन चेतना अभियान इन्दौर का साहित्य सम्मान, 25 जनवरी 2006।
- विमलादेवी न्यास, अयोध्या द्वारा विदेशों में हिन्दी प्रचार-प्रसार के लिए "कुँवर नारायण अध्ययन केन्द्र" में मानद शोध सम्मान, 7 फरवरी 2006।
- पारिजात संस्कृति संस्थान कोलकता द्वारा साहित्य-संस्कृति सम्मान, 12 मई 2006।
- गुरु घासीदास साहित्य एवं संस्कृति अकादमी रायपुर (छ.ग.) द्वारा हिन्दी सेवा सम्मान, 16 मई 2006।
- महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति पूणे द्वारा विशिष्ट साहित्य सम्मान, 24 मई 2006।

- 14 सितम्बर 2006 को वर्ष 2004 के लिए यू.पी. हिंदी संस्थान द्वारा 'प्रवासी भारतीय हिंदी भूषण' सम्मान।
- 8 अगस्त 2008 को रामायण केन्द मोरिशश द्वारा विश्व में रामायण के प्रचार-प्रसार के लिए महर्षि अगस्त्य सम्मान।
- 24 सितम्बर 2012 को नवें विश्व हिंदी सम्मेलन (दक्षिण अफ्रीका) में 'विश्व हिंदी सम्मान'।
- विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष में वर्ष 2012 का भारतीय दूतावास लंदन द्वारा ''हरिवंश राय बच्चन'' हिंदी सम्मान 19 मार्च 2013।
- रामायण सम्मेलन 2014, अलाहाबाद 2-6 नवम्बर, 2014 के उपलक्ष में रामायण की विशिष्ट सेवाओं के लिए।
- क्वांटम ग्लोबल रुड़की द्वारा ''क्वांटम साहित्य गौरव सम्मान'', 8 नवम्बर 2014।
- इटावा हिंदी सेवा निधि द्वारा ''डॉ.दुखनराम विज्ञान हिंदी-सेवा सम्मान'', 21 दिसम्बर 2014।
- आधारशिला फाउन्डेशन नैनीताल द्वारा ''राहुल सांकृत्यायन हिंदी सम्मान'', 1 जूलाई 2015।
- विश्व हिंदी साहित्य परिषद द्वारा ''साहित्य भारती सम्मान'', 03 जूलाई 2016।

संस्थागत सम्मान

वर्ष 2006 के लिए 10 फरवरी 2007 को गीतांजलि समुदाय को पहला 'फ़्रेडरिक पिनकॉट यू.के. हिंदी प्रचार-प्रसार सम्मान' भारतीय दूतावास द्वारा।

विशिष्ट सम्मानः

26 नवम्बर 2005 को लखनऊ महोत्सव के अन्तर्गत अखिल भारतीय कवि सम्मेलन के विशिष्ट अतिथि के रूप में उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री माननीय मुलायम सिंह यादव द्वारा सम्मान्नित।

विभिन्न परियोजनाओं के लिए प्राप्त वित्तीय अनुदान

- अप्रैल 1997 में ''पॉप अ पिप'' प्रोजेक्ट के लिए आर्ट काउंसिल ऑफ इंग्लैड द्वारा A4E स्कीम के अंतर्गत, ग्रांट रेफरेंस 51-1550, £5,000.0 का 2 वर्षों के लिए "गीतांजलि बहुभाषीय साहित्यिक समुदाय" को अनुदान मिला।
- जुलाई 2005 में ''अन्तर्राष्ट्रीय बहुभाषीय संगोष्ठी'' के आयोजन के लिए सैंडवेल मेट्रोपोलिटन बरो काउंसिल द्वारा वेडनेसबरी लोकल एरिया बजट के अन्तर्गत, ग्रांट रेफरेंस 168, "गीतांजलि बहुभाषीय साहित्यिक समुदाय" को £5,000.0 को एक साल की अवधि के लिए अनुदान मिला।
- फरवरी 2005 में समुदाय के सदस्यों की उपलब्धियों को रेखांकित करने के लिए उनकी रचनाओं को प्रकाशित करने के लिए Awards For All द्वारा, ग्रांट रेफरेंस A4E/3/010139219, £4,300.0 का "गीतांजलि बहुभाषीय साहित्यिक समुदाय" को एक साल की अवधि के लिए अनुदान मिला।
- अगस्त 2005 में 3 दिवसीय संगोष्ठी के आयोजन के लिए Awards For All द्वारा, ग्रांट रेफरेंस A4E/3/010171491, £5,000.0 का ''मल्टीलिंग्वल फोरम फॉर इन्टीग्रेशन ऐंड पीस'' को एक साल की अवधि के लिए अनुदान मिला।
- अगस्त 2005 में सैंडवेल काउंसिल ऑफ वॉलंटरी ऑर्गनाइजेशन्स के कम्युनिटी चेस्ट स्कीम के अंतर्गत, ग्रांट रेफरेंस 0506CC05, £3,000.0 का ''मल्टीलिंग्वल फोरम फॉर इन्टीग्रेशन ऐंड पीस'' को एक साल की अवधि के लिए समाज में एकता एवं समरसता स्थापित करने के लिए आंशिक द्वारा अनुदान मिला।
- अप्रैल 2007 में कम्युनिटी डेवलपमेंट फाउंडेशन के फेथ कम्युनिटीज़ कैपिसिटी बिल्डिंग फंड स्कीम के अंतर्गत "गीतांजलि बहुभाषीय साहित्यिक समुदाय" को समाज में बहुभाषी कविताओं के माध्यम से एकता एवं शांति स्थापित करने के लिए, ग्रांट रेफरेंस 3583, £3,000.0 का एक वर्ष के लिए अनुदान मिला।
-

अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों का आयोजन

1. **1999,** छठा अन्तरराष्ट्रीय विश्व हिंदी सम्मेलन (14-19 सितम्बर, लंदन): यू.के. की तीन अन्य संस्थाओं के साथ मिल कर ''हिंदी एवं युवा पीढ़ी'' विषय को सम्बोधित इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। प्रारम्भ में कुछ दिक्कतें आई जिसमें मौसम ने भी अड़चनें डालीं किंतु तत्कालीन उपउच्चायुक्त श्री हरदीप पुरी जी की सूझबूझ ने सब सम्भाल लिया। मै कार्यकारिणी समिहित का अध्यक्ष रहा जिसमें विश्व के विभिन्न देशों से लगभग 550 प्रतिभागियों ने अपना योगदान दिया था।
2. **2005,** अन्तरराष्ट्रीय बहुभाषी संगोष्ठी (27-29 अगस्त, बर्मिघम): भारत, इटली, नार्वे, एवं यू.के. के लगभग 30 विद्वानों

ने ''भारतीयता की पहचान के लिए भारत में एक भाषा'' जैसे विषय पर विचार भारत की विभिन्न भाषाओं में रखे। सारे प्रपत्रों को सम्मेलन कार्य विवरण में प्रकाशित किया गया। 16 सूत्रों की पारित प्रस्तावों की सूची को विचारार्थ भारत सरकार को भी भेजा गया था । इस सम्मेलन के माध्यम से यू.के. की अनेकानेक संस्थाएं जुड़ सकी थीं।

3. **2006**, 21वां अन्तरराष्ट्रीय रामायण सम्मेलन (1-3 सितम्बर, बर्मिघम): राम कथा की अन्तरराष्ट्रीय प्रासंगकिकता एवं इसके अंदर निहित अनेकानेक समकालीन समस्याओं के समाधान को सम्बोधित इस त्रिदिवसीव सम्मेलन में 11 देशों के रामायण प्रेमियों एवं विद्वानों ने अपने विचार प्रस्तुत किए । सम्मेलन की मुख्य विशषता थी कि इसमें युवा पीढ़ी की जिज्ञासाओं को तृप्त करने के लिए तथा उनके प्रश्नों के समाधान के लिए एक खुला सत्र रखा गया था। सम्मेलन के संरक्षक श्री लल्लन प्रसाद व्यास जी के अनुसार 1985 से निरंतर चल रहे ऐसे सम्मेलनों में यह सबसे अधिक सुचारु रूप से आयोजित एवं प्रबंधित था। भारत सरकार ने भी दो विद्वानों का व्यय वहन कर इसकी गरिमा बढ़ाई थी।

4. **2011,** यू.के. क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलन (24-26 जून, बर्मिघम): वास्तव में इस सम्मेलन की सारी योजना 2008 में ही अपना अंतिम रूप ले चुकी थी जब उस समय दूतावास में हिंदी एवं संस्कृति अधिकारी श्री राकेश दूबे जी थे। यह सम्मेलन भारत सरकार के आर्थिक अनुदान एवं स्थानीय संस्थाओं के सहयोग एवं दूतावास में हिंदी एवं संस्कृति अधिकारी श्री आनन्द कुमार जी की कर्मठता के कारण ही अपनी गरिमा को पा सका था। दूतावास एवं बर्मिघम कौंसलावास के पदाधिकारियों तथा तत्कालीन उपसचिव हिंदी श्रीमती राकेश शर्मा का मार्गदर्शन इसकी सफलता का केन्द्रबिन्दु रहा है। तीनों दिनों की कार्यवाही को वीडियो टेप किया गया था और युवापीढ़ी को इससे जोड़ने के लिए विशेष प्रबंध किए गए थे। सबको सूचना देने के लिए सम्मेलन की वेबसाइट का उद्घाटन तत्कालीन उच्चायुक्त श्री नलिन सूरी जी ने किया था। सम्मेलन की सफलता के बारे में अपने विचार रखते हुए उपसचिव हिंदी श्रीमती राकेश शर्मा जी ने कहा था-''यह कार्यक्रम तो विश्व हिंदी सम्मेलनों के स्तर का हो गया है जिसमें लगभग 600 लोगों ने भागीदारी की।'' बर्मिघम में इतने अधिक प्रतिभागियों को एकत्रित कर पाना आनन्द जी के प्रबंधन का ही प्रतिफल रहा है। विश्व हिंदी सम्मेलन के स्तर के इस बहुत ही कम बजट पर आयोजित सम्मेलन के मुख्य बिन्दु:

4.1 प्रोफेसर कृष्ण दत्त पालीवाल का 'हिंदी की दशा और दिशा' पर ओजस्वी बीज वक्तव्य उद्घाटन सत्र में।

4.2 छह देशों के 27 विद्वानों के 9 सत्रों में प्रपत्र वाचन।

4.3 सममेलन के मुख्य विषय थे:

4.3.1 'विश्व में हिंदी की दशा और दिशा'

4.3.2 'हिंदी एवं भारतीय संस्कृति-युवा पीढ़ी के परिप्रेक्ष्य में'

4.3.3 'हिंदी की वैश्विकता एवं हिंदी लिपि'

4.3.4 'हिंदी भाषा के शिक्षण की समस्याएं और चुनौतियाँ'

4.3.5 'यू.के. में हिंदी शिक्षण की समस्याएं और चुनौतियाँ'

4.3.6 'हिंदी के प्रचार-प्रसार में प्रवासियों का योगदान'

4.3.7 'हिंदी के प्रचार-प्रसार में मीडिया का योगदान'

4.3.8 'हिंदी एवं भारतीय संस्कृति-युवा पीढ़ी के परिपेक्ष्य में-खुला सत्र'

4.3.9 'विचार मंथन एवं प्रस्ताव सत्र'

5. उद्घाटन सत्र में लगभग 600 एवं अन्य सत्रों में लगभग 200 लोगों की सक्रिय भागीदारी।

सम्प्रति:

- 2004 में विश्वविद्यालयीन सेवा से निवृत होने पर भारतीय संस्कृति के प्रचार एवं प्रसार में पूर्णरूप से संलग्न।
- 'हिंदू काउंसिल ऑफ बर्मिघम के भूतपूर्व उपाध्यक्ष।

आगामी योजनाएं :

- भारत में बच्चों के लिये कैंसर चिकित्सालय बनाने की योजना।
- प्राचीन भारत के नीति शास्त्रियों पर प्रासंगिक दृष्टि से शोध कार्य।
- भारत के विभिन्न क्षेत्रों में घूम-घूम कर भाषायी समन्वय की आवश्यकता पर जनमत बनाना।

सम्पर्क:

21 बिडफ़ॅर्ड ड्राइव, सेली ओक, बर्मिघम
बी 29 6क्यू जी
यू .के़
दूरभाष : 00 44 121 472 5464
E-Mail : profdrkrishna@gmail.com

21 Bideford Drive, Selly Oak, Birmingham
B29 6QG
U.K.
Tel: 00 44 121 472 5464